English

setuu अध्याय 11

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

इच्छा पूर्ति का रहस्य खोला चिरंजीवी हनुमान जी ने

हनुमान जी 41 साल बाद मातंगो से मिलने आये थे और चरण पूजा का पहला दिन था | चरण पूजा का पहला सत्र बहुत सवेरे हुआ जिसके यजमान बसंत नाम की मातंग थे | दूसरा सत्र नाश्ते के बाद हुआ जो चरिता नामक मातंग महिला के लिए था | रीति रिवाजो के अनुसार पहले हनुमान जी ने यजमान को विश्व के कुछ रहस्यों के बारे में बताकर उसकी आत्मा में ब्रह्मज्ञान का प्रकाश कराया | जब उसकी आत्मा से भ्रम की एक परत उतरी तो वह अर्पण के योग्य हुई | बाबा मातंग ने उसके लिए फलों का अर्पण किया | जब अर्पण का विधान संपन्न हुआ , हनुमान जी ने उससे कुछ मांगने को कहा | उसने उस ब्रह्मज्ञान की इच्छा प्रकट की जो मोक्ष की ओर ले जाता है | हनुमान जी ने उसे अस्तित्व का रहस्य समझाकर ज्ञान का प्रसाद दिया |

जब हनुमान जी ने अस्तित्व का रहस्य समझाना समाप्त किया , प्रश्न – उतर का सिलसिला शुरू हुआ | उर्मी , जो उस समय होतर की भूमिका निभा रही थी , ने चर्चा का नियंत्रण किया |

सत्र का अंतिम प्रश्न धनुष्क नामक मातंग ने पूछा | वह खड़ा हुआ और हाथ जोड़कर बोला – "हे हनुमान जी , आपने बताया कि जब हम सुख की इच्छा करते हैं तो हम अपरोक्ष रूप से दुःख की भी इच्छा करते हैं | ऐसा क्यों है? हम केवल सुख की इच्छा क्यों नहीं कर सकते ? इस संसार में दुःख क्यों हैं ? संसार में केवल सुख क्यों नही हो सकता ?"

धनुष्क ने बड़ी झिझक से यह सवाल पूछा क्योंकि हनुमान जी इस प्रश्न का उत्तर पहले ही दे चुके थे | उस उत्तर से धनुष्क को छोड़कर सभी मातंग संतुष्ट थे | जब धनुष्क ने झिझक के साथ यह प्रश्न पूछा , वहां उपस्थित नवयुवक मातंगो की हंसी छूट गई |

हनुमान जी नवयुवक मातंगों के इस प्रकार हंसने से क्रोधित नजर आये | वे बोले – "हे मूढ प्राणियों ! तुम्हारा मस्तिष्क अज्ञान का एक अँधेरा कक्ष है | तुम्हारा लक्ष्य है इस कक्ष से बाहर निकलना | एक प्रश्न अँधेरे कमरे में प्रकाश की किरण की तरह होता है | तुम्हे उस प्रकाश की किरण का पीछा करना चाहिए ताकि तुम ये पता लगा सको की किरण कहाँ से आ रही है और कमरे का दरवाजा किस ओर है जहाँ से बाहर निकला जा सकता है | एक प्रश्न तुम्हे दरवाजे के नजदीक ले जाना चाहिए | अगर तुम्हे अपने प्रश्न का उतर मिल गया है तो इसमें खुश होने की कोई बात नहीं है | इसके बजाये तुम्हे दुखी होना चाहिए क्योंकि एक प्रश्न ख़त्म होने का अर्थ है प्रकाश की किरण का ख़त्म होना | उत्तर प्राप्त करने में किया गया संघर्ष उत्तर से कही ज्यादा महत्वपूर्ण है | ऐसा संघर्ष तुम्हे दरवाजे की ओर ले जाता है जबकि उत्तर उस प्रकाश की किरण का वध कर देता है |"

अब वे नवयुवक मातंग गंभीर मुद्रा में आ गए थे | उनकी आँखे बता रही थी कि वे अपने व्यवहार के लिए दुखी थे | हनुमान जी ने अब धनुष्क का रुख किया | उन्होंने उसे प्रश्न पूछने के लिए शाबाशी दी और इसे आगे आने को कहा |

जब धनुष्क हनुमंडल के मध्य में आ गया तब हनुमान जी बोले – "हाँ , मानवलोक में सब ओर सुख हो सकता है | सतयुग में था भी | और कलियुग में भी कोई मनुष्य हमेशा सुखी रह सकता है |"

"लेकिन प्रभु आपने बताया था की जब हम सुख की इच्छा करते हैं तो स्वतः दुःख की भी परोक्ष इच्छा करते हैं |" धनुष्क झिझकते हुए बोला |

हनुमान जी ने अपने दिव्य चरणों में रखी फल की टोकरी की ओर इशारा किया और बोले – “क्या तुम इस टोकरी में संतरा देख रहे हो ? इस संतरे में दो चीजें इकठ्ठी हैं – (१) रस (२) शेष (छिलका , गुदा , बीज आदि) | जब तुम प्रकृति से संतरे का रस मांगते हो , तो प्रकृति तुम्हे पूर्ण संतरा दे सकती है , केवल रस नहीं | अगर तुम्हे केवल रस चाहिए तो तुम्हे प्रकृति को बताना पड़ेगा कि संतरे से रस अलग कैसे किया जाए और शेष को कहाँ फेंका जाए | उसी प्रकार सुख तथा दुःख एक ही गठ्ठे में आते हैं | अगर तुम विश्व से सुख मांगते हो तो विश्व तुम्हे पूरा गठ्ठा दे सकता है , केवल सुख नहीं | अगर तुम्हे केवल सुख चाहिए तो तुम्हे विश्व को यह बताना होगा की सुख के साथ गठ्ठे में जो दुःख है उसे कहाँ फेंका जाए |”

“दुःख को फेंकना!” धनुष्क की आँखें चमक उठी , “हे प्रभु , क्या हम दुःख को ठीक उसी प्रकार फेंक सकते हैं जिस प्रकार कूड़े को फेंकते हैं ?”

“तुम्हे यह रहस्य समझाने के लिए देवराज इंद्र की आवश्यकता होगी |” हनुमान जी अपने आसन से खड़े हो गए और दोनों हाथ जोड़ लिए | सभा में उपस्थित गण ने भी वैसा ही किया | हनुमान जी अपनी आँखे बंद करके बोले – “मैं इंद्रदेव का आह्वान करता हूँ कि वे इस चरणपूजा की रस्म में उपस्थित हों और मातंगों को आशीर्वाद दें |”

जब इंद्र वहां पर प्रकट हुए , हनुमान जी ने उनकी प्रशंसा में स्तोत्रगान किया | वे बोले – “हे मातंगों , किसी भी आत्मा की इच्छा पूर्ती की जिम्मेदारी देवराज इंद्र की है | जब आपकी आत्मा इच्छा प्रकट करती है तब त्रिदेव के नियम के अनुसार पूर्ण विश्व उस इच्छा को पूर्ण करने में जुट जाता है | जैसा कि मैंने बताया , आपके आस पास जो विश्व है वह वास्तव में एक माया है | यह माया तब बनती है जब आकाश का द्रव काल के धागों पर पड़ता है | आकाश के द्रव का वितरण इंद्र देव करते हैं , अतः वे इस माया के नियंत्रक हैं | इच्छा पूर्ती का रहस्य जानने के लिए आपको यह जानना आवश्यक है की जब आत्मा इच्छा प्रकट करती है तब इंद्र देव कैसे कार्य करते हैं |”

इंद्र देव बोले – “हे चिरंजीवी हनुमान , मैं आपके शिष्यों को इच्छापूर्ती का रहस्य समझने में अवश्य सहायता करूँगा |”

हनुमान जी अपने आसन पर पुनः बैठ गए | इंद्र फिर धनुष्क की ओर मुड़े और बोले – ‘हे धनुष्क , कोई इच्छा प्रकट करो |”

“मैं एक सुख की इच्छा करता हूँ हे देवराज |” धनुष्क हाथ जोड़कर और सिर झुकाकर तुरंत बोला |

इंद्र देव के दायें हाथ की हथेली में एक अजीब द्रव प्रकट हुआ | वे बोले – “हे धनुष्क , मेरे हाथ को देखो | अगर मैं इस द्रव का मंथन करूँ तो इसमें से एक दुःख और एक सुख निकलेगा | तुन्हें दोनों लेने होंगे | क्या मैं इसका मंथन करूँ ?”

धनुष्क ने उत्तर दिया – “हे देवराज इंद्र , मुझे केवल सुख दे दीजिये | मैं दुःख नहीं चाहता |”

इंद्र बोले – “हे नादान बच्चे , अगर आपको केवल सुख चाहिए तो मैं दुःख को कहाँ फेंकूं? यह पूरा द्रव तुम्हारी इच्छा का परिणाम है इसलिए तुम्हे इसे पूर्णतः ग्रहण करना पड़ेगा |”

धनुष्क ने पूछा – “हे प्रभु , अगर ऐसा है तो कम से कम क्या मै ये चुन सकता हूँ कि मैं पहले क्या ग्रहण करूं – सुख अथवा दुःख ? अगर चुनने की स्वतंत्रता हो तो मैं पहले सुख ग्रहण करना चाहूँगा और इसके बाद दुःख |”

इंद्र देव धनुष्क के पास आये और उसे कुशाग्रता से देखा – "मुझे देखने दो कि तुम इस समय क्या ग्रहण करने के योग्य हो |" कुशाग्रता से परिक्षण करने के पश्चात् इंद्र बोले – "इस समय तुम न तो सुख ग्रहण करने के योग्य हो और न ही दुःख ग्रहण करने योग्य |"

"लेकिन देव , मैं विश्व को अपनी इच्छा प्रकट कर चुका हूँ | परिणामस्वरूप यह द्रव पैकेट आपकी हथेली में प्रकट हुआ है जिसमे एक सुख है और एक दुःख | अगर आप इस सुख-दुःख के पैकेट को, जो कि मेरा है , को अपने पास रखते हैं , तो क्या यह वैश्विक नियमों का उलंघन नहीं होगा?' धनुष्क ने पूछा |

"हे धनुष्क, मैं इस पैकेट को तब तक अपने पास रख सकता हूँ जब तक कि तुम इसे ग्रहण करने के योग्य नहीं हो जाते | मात्र किसी चीज की इच्छा करने से तुम उस चीज को प्राप्त करने के योग्य नहीं हो जाते | कर्म तुम्हे इस योग्य बनाते हैं कि तुम जिस चीज की इच्छा करो उसे प्राप्त कर सको |" इंद्र देव ने उत्तर दिया |

"मैं अपने कर्मो को इस योग्य कैसे बनाऊं कि यह पैकेट प्राप्त कर सकू, हे देव !" धनुष्क ने पूछा |

इंद्र देव के उत्तर के बजाये उसे एक घंटी बजने की ध्वनी सुनाई दी | यह उस छोटी सी घंटी की आवाज थी जो हनुमान जी की पूँछ से बंधी हुई थी | जब धनुष्क ने उत्सुकता से हनुमान जी की ओर देखा , वे मुस्कुराकर बोले – "तुम हर क्षण बदल रहे हो | किसी भी दिए गए समय पर तुम या तो अपने से कुछ अलग कर रहे हो अथवा अपने में कुछ जोड़ रहे हो | इसी से तुम्हारा कर्म बदल रहा है | जब तुमने घंटी की ध्वनि सुनी तो तुम बदले | ध्वनि से पहले तुम इंद्र देव की ओर देख रहे थे लेकिन ध्वनि के पश्चात् तुम मेरी तरफ देख रहे हो | इसी तरह तुम बदलते हो , इसी तरह तुम्हारा कर्म बदलता है |"

धनुष्क ने पूछा – "हे चिरंजीवी हनुमान , अगर मैं अपने आस पास की चीजो के प्रति उदासीन रहूँ तो क्या होगा ? क्या तब मेरा कर्म अपरिवर्तित रहेगा?"

इससे पहले कि हनुमान जी बोल सकते , इंद्र देव ने उत्तर दिया – "हे धनुष्क , तुम हर चीज के प्रति उदासीन नहीं रह सकते | उदाहरण के तौर पर काल हमेशा गतिमान रहता है | तुम काल के प्रति उदासीन नहीं रह सकते | अगर तुम्हारे आस पास कुछ नहीं बदलेगा तो समय तो अवश्य बदलेगा | और समय के साथ तुम्हारा कर्म बदलेगा |"

धनुष्क ने पुछा – "हे देव , मुझे ऐसा क्या करना चाहिए की मैंने जो इच्छा प्रकट की है उसको प्राप्त करने के योग्य हो सकूँ | मैं अपने कर्म को कैसे बदलू जिससे की आप मुझे वह सुख-दुःख का पैकेट दे सकें , जो की आखिरकार मेरा ही है |"

"हनुमंडल से बाहर जाकर सैर करना कैसा रहेगा?" हनुमान जी ने सलाह दी और इंद्र ने उस पर सहमति प्रकट की | "क्योंकि जब तुम चलते हो तब स्पेस में तुम्हारी अवस्था बदलती है | स्पेस में अवस्था बदलने से भी कर्म बदलता है |"

बाबा मातंग को संकेत मिल गया और उन्होंने रस्म समाप्त करने की प्रक्रिया शुरू कर दी | हनुमान जी ने अपना आसन त्याग दिया और वे अपने आसन के सामने बने पवित्र जल कुंड के ऊपर चले और अंतर्ध्यान हो गए | इंद्र देव भी अंतर्ध्यान हो गए | जब बाबा मातंग ने प्रक्रिया पूरी कर ली तब प्रार्थना सभा भंग हो गई |

जब मातंग गण हनुमंडल से निकलकर अपने घर की ओर प्रस्थान कर रहे थे तब धनुष्क को छोड़कर सभी शांत और मौन थे | बेचैनी में धनुष्क हर कदम सावधानी से रख रहा था | वह अपेक्षा कर रहा था की उसे किसी भी कदम पर अकस्मात् सुख अथवा अकस्मात् दुःख मिल सकता है |

दुःख तब आया जब वह अपेक्षा नहीं कर रहा था | पिछले कुछ महीनों से वह एक लकड़ी के टुकड़े पर कारीगरी कर रहा था | डिजाईन अच्छा बन पड़ा था और वह उसको अंतिम रूप दे रहा था | इससे वह आजकल बहुत खुश था | चरण पूजा की रस्म पूरी होने के पश्चात् जब वह अपनी झोपडी में पहुंचा तो उसे अपना डिजाईन खराब हुआ मिला | पानी का एक पूरा घड़ा उस पर गिर गया था जिसके कारण वह लकड़ी फूल गई थी | उसे गहरा दुख हुआ की उसकी इतने महीनों की मेहनत पर पानी फिर गया था | दुःख के उन क्षणों में वह इंद्र देव के साथ हुए अपने वार्तालाप को भी भूल गया था |

कुछ मिनट बाद जब वह सदमे से उबरा , तब इंद्र देव वहां प्रकट हुए और बोले – "हे धनुष्क , मेरे पास तुम्हारे उस पैकेट में एक दुःख था और एक सुख | तुम्हारे कर्म इस समय दुःख के योग्य थे अतः मैंने तुम्हे दुःख दे दिया है | अब उस पैकेट में से तुम्हारा एक सुख मेरे पास बचा हुआ है | जब भी तुम्हारे कर्म उस सुख के योग्य होंगे, वो सुख तुम्हे मिल जाएगा |"

इंद्रदेव वहां से अंतर्ध्यान हो गए | धनुष्क अपनी झोपडी से बाहर आ गया और आशा तथा जोश में इधर उधर टहलने लगा | कुछ समय पश्चात् वह झोपडी में वापिस आ गया | वह सोच रहा था कि आखिर उसे वह सुख अभी तक मिला क्यों नहीं | चरण पूजा का तीसरा सत्र शुरू होने में अभी समय था | उसने कुछ मिनट आराम करने का फैसला किया |

शीघ्र ही वह निद्रा में चला गया | उसने स्वप्न देखा कि हनुमान जी उसे श्रेष्ठ शिष्य के सम्मान के रूप में एक रत्न भेंट कर रहे थे | उसकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं था | लेकिन शीघ्र उसकी नींद खुल गई और उसने पाया कि वह तो मात्र एक स्वप्न था | इंद्र देव पुनः उसके पास प्रकट हुए और बोले – "हे धनुष्क , अब मैंने तुम्हे सुख भी दे दिया है |"

"लेकिन वह तो स्वपनलोक में था प्रभु , यहाँ मानवलोक में नहीं |" धनुष्क बोला |

"जब मैं देखता हूँ की किसी आत्मा के लिए कोई इच्छा पूर्ण करने के लिए आवश्यक कर्म मानवलोक में नहीं हैं, तो मैं वह इच्छा स्वपनलोक में पूरी कर देता हूँ | स्वपनलोक माया का एक लचीला संसार है जहाँ पर कोई भी आत्मा, जैसी देह, मन अथवा कर्म चाहे , धारण कर सकती है |" इंद्र देव ने उत्तर दिया |

इंद्रदेव का उत्तर सुनकर धनुष्क हैरान रह गया | वह क्या बोले उसे समझ नहीं आ रहा था | उसने अपना सुख स्वप्नलोक में बर्बाद कर दिया जो की अन्यथा उसे मानवलोक में मिल सकता था | उसने अपने विचारों को सुव्यवस्थित किया और बोला – "देव , आप इन्तजार कर सकते थे | शायद कुछ समय बाद मानवलोक में ही मेरे कर्म वह सुख प्राप्त करने के योग्य हो जाते | तब तक वह सुख अपने पास रख सकते थे | मुझे माफ़ कीजिये , किन्तु आपने मेरा वह सुख स्वपनलोक में बर्बाद क्यों किया?"

"क्योंकि तुमने अपनी इच्छा पर समय की सीमा बाँध दी थी | तुम वह सुख तुरन्त चाहते थे | तुम उस सुख के लिए बेचैन हो रहे थे | लेकिन उस सुख को तुरंत प्राप्त करने के लिए तुम्हारे पास कर्म नहीं थे | इसलिए मेरे पास तुम्हारे उस सुख को स्वपनलोक में तुम्हे प्रदान करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था |"

"हे देव, अगर मैं अपनी इच्छा पर कोई समय सीमा न रखूं तो आप मानव लोक में कितना इन्तजार करने के बाद उसे स्वपनलोक में पूरा करने के लिए बाध्य होते हैं?" धनुष्क ने पूछा |

इंद्र ने उत्तर दिया – "अगर तुम अपनी इच्छा पर समय सीमा न रखो तो मै अनंत तक इन्तजार कर सकता हूँ | उदाहरण के तौर पर , तुम्हारी आत्मा की पिछले जन्मों से बहुत सारी इच्छाएं लंबित हैं | जब किसी लंबित इच्छा को पूर्ण करने योग्य तुम्हारा कर्म हो जाता है तो मैं उस इच्छा को पूरी कर देता हूँ

, अन्यथा वह इच्छा जन्म दर जन्म ऐसे ही लंबित रहती है |"

"हे देव, मुझे याद नहीं है की मैंने पिछले जन्म में क्या इच्छाएं प्रकट की थी | पिछले जन्म की इच्छाओं को इस जन्म में पूरा करना तो अन्याय प्रतीत होता है |"

इंद्र देव ने उत्तर दिया – "अगर ऐसा है तो तुम्हारा यह जन्म लेना भी अन्याय है | तुम्हे यह जन्म पिछले जन्म की इच्छाओं के कारण ही मिला है | तुम्हारा वर्तमान देह –मन पिछले जन्म की इच्छाओं का ही परिणाम है |"

धनुष्क बोला – "हे प्रभु, मैं अपने पिछले जन्म की लंबित इच्छाओं से छुटकारा कैसे पाऊं?"

"पिछले जन्म की लंबित इच्छाओं से छुटकारा पाने की तुम्हारी इच्छा भी एक इच्छा ही है | इस इच्छा की पूर्ति के लिए योग्य कर्मों का होना आवश्यक है |"

"किस तरह के कर्म , प्रभु? कृपा मार्गदर्शन करें |" धनुष्क ने पूछा |

"वैसे ही कर्म जो मोक्ष के लिए आवश्यक होते हैं | जब तुम अपनी सभी पिछली लंबित इच्छाओं से छुटकारा पा लोगे और कोई नई इच्छा भी उत्पन्न नहीं करोगे, तब तुम्हे मोक्ष की प्राप्ति होगी |" भगवान् इंद्र ने बताया |

"हे प्रभु, मेरे हृदय में भय उत्पन्न हो रहा है | क्या आप बता सकते हैं कि मेरी पिछले जन्म की कौन सी इच्छाएं लंबित है? वे इच्छाएं मेरे जीवन में सुख लाने वाली हैं अथवा दुःख?"

"अपने पिछले एक जन्म में तुमने सौभाग्य की इच्छा प्रकट की | जैसा कि तुम्हे पता है सौभाग्य और दुर्भाग्य एक ही पैकेट में आते हैं | उस पैकेट में से सौभाग्य मैंने तुम्हे पिछले जन्म में ही दे दिया है लेकिन दुर्भाग्य नहीं दे पाया | तुम्हारा वह दुर्भाग्य अब भी मेरे पास है | जैसे ही तुम्हारे कर्म वह दुर्भाग्य प्राप्त करने के योग्य हो जायेंगे, मैं वह दुर्भाग्य तुम्हे दे दूंगा |" इंद्र देव बोले |

धनुष्क यह सुनकर भयभीत हो गया | उसने प्रार्थना की – "हे प्रभु , दया कीजिये | मुझे दुर्भाग्य नहीं चाहिए | कृपा आप इस दुर्भाग्य को मुझे स्वपनलोक में दे दीजिये, यहाँ मानवलोक में नहीं |"

इंद्र देव ने उत्तर दिया – "हे धनुष्क , स्वपनलोक तो अंतिम विकल्प है | जब मुझे इच्छा को मानवलोक में पूर्ण करने का आसार न लगे , तब मैं वह इच्छा स्वप्नलोक में पूरी करता हूँ |"

"हे देव, क्या मेरे कर्म पिछले जन्मों में इतने अच्छे रहे हैं की आप मुझे यह दुर्भाग्य नहीं दे पाए? मेरा मतलब , यह दुर्भाग्य आपके पास अब तक लंबित क्यों है? आपको कौन सी शक्ति यह दुर्भाग्य मुझे देने से रोक रही है?" धनुष्क ने पूछा |

इंद्र ने उत्तर दिया – "हे धनुष्क , तुम पिछले जन्मों में भी हनुमान भक्त रहे हो | तुम्हारी आत्मा हनुमान जी के साथ गहराई से जुडी है और हनुमान जी देवी लक्ष्मी (माता सीता) के साथ गहराई से जुड़े हैं | परिणामस्वरुप , तुम्हारी आत्मा देवी लक्ष्मी से भी गहराई से जुडी हुई है | जब कोई आत्मा देवी लक्ष्मी से जुडी हो तो मैं उस आत्मा को दुर्भाग्य नहीं दे सकता | ऐसी आत्मा को मैं धन , सौन्दर्य , सुख , वैभव दे सकता हूँ ; उसके विपरीत कुछ नहीं दे सकता | लेकिन मुझे अब भी सम्भावना लग रही है कि तुम्हारी आत्मा कुछ पल के लिए ही सही , हनुमान जी से अलग होगी और मुझे तुम्हे यह दुर्भाग्य देना का मौका मिलेगा |"

"हे प्रभु , मेरी आत्मा हनुमान जी से कभी नहीं हटेगी , एक पल के लिए भी नहीं | अतः आप मुझे यह दुर्भाग्य नहीं दे पायेंगे |" धनुष्क ने राहत की सांस लेते हुए कहा |

"जब मुझे यह विश्वास हो जाएगा तो मैं इस दुर्भाग्य को तुम्हे स्वपनलोक में देकर नष्ट कर दूंगा | लेकिन तब तक मैं इसे अपने पास ही रखूँगा |" इंद्र ने कहा |

"देव, अगर मेरी आत्मा एकाध पल के लिए हनुमान जी से हटती भी है , मैं देवी लक्ष्मी से भी जुड़ा हूँ | अतः मैं दुर्भाग्य से पूर्णतः सुरक्षित हूँ |" धनुष्क ने गर्व से कहा |

इंद्र देव ने उत्तर दिया – "हे धनुष्क , तुम देवी लक्ष्मी के उतना समीप कभी नहीं हो सकते जितना की हनुमान जी हैं | देवी लक्ष्मी के साथ तुम्हारा गहरा सामीप्य , तुम्हारे हनुमान जी के साथ गहरे सामीप्य के कारण ही है | जैसे ही हनुमान जी से तुम्हारा सामीप्य भंग होगा , देवी लक्ष्मी के साथ भी टूट जाएगा और मुझे तुम्हे दुर्भाग्य देने का मौका मिल जाएगा |"

"हे देव , क्या पिछले जन्म से मेरे दुःख और दुर्भाग्य आदि नकारात्मक चीजें ही लंबित हैं?"

"तुम्हारी पिछले जन्म से अनगिनत इच्छाएं लंबित हैं | मैंने तुम्हे इस दुर्भाग्य वाली इच्छा के बारे में केवल उदाहरण देने के लिए बताया है | स्वाभाविक रूप से सकारात्मक चीजे भी लंबित हैं | उदाहरण के तौर पर, पिछले कुछ जन्मों से मेरे पास तुम्हारा एक सुख लंबित है |" इंद्र देव ने बताया |

"हे देव, कृपा मुझे बताएं की आप वह सुख मुझे क्यों नहीं दे पा रहे हैं? यह लंबित क्यों पड़ा है?" धनुष्क ने पूछा |

"हे धनुष्क, वह सुख तुम्हे मोक्ष के मार्ग से भटका सकता है |" इंद्र देव ने उत्तर दिया – "तुम्हारी आत्मा का अति सामीप्य हनुमान जी से है और हनुमान जी का अति सामीप्य भगवान् विष्णु से | परिणामस्वरूप , तुम्हारी आत्मा का अति सामीप्य भी भगवान् विष्णु से है | जब कोई आत्मा भगवान् विष्णु से जुडी हो तो मैं उस आत्मा को ऐसा कुछ नहीं दे सकता जो उसे मोक्ष के मार्ग से भटका दे – फिर चाहे वह सुख हो अथवा दुःख | मैं तुम्हे दुःख दे सकता हूँ , भगवान् विष्णु मुझे नहीं रोकेंगे बशर्ते वह दुःख तुम्हे मोक्ष की ओर बढाने में सहायक हो | मैं तुम्हे सुख दे सकता हूँ , भगवान् विष्णु मुझे नहीं रोकेंगे , बशर्ते वह सुख तुम्हे मोक्ष के मार्ग पर प्रगतिशील करे | लेकिन भगवान् विष्णु मुझे इस सुख को तुम्हे देने से रोक रहे हैं क्योंकि यह सुख तुम्हे मोक्ष के मार्ग से भटका सकता है | अगर तुम्हारा हनुमान जी से सामीप्य टूटता है तो तुम्हारा सामीप्य भगवान् विष्णु से भी टूट जाएगा और मुझे तुम्हे यह सुख देने का अवसर मिल जाएगा |"

"हे देव , मुझे ऐसा सुख नहीं चाहिए जो मुझे मोक्ष के मार्ग से भटका दे | कृपा मुझे कुछ ओर बताएं जो मेरे पिछले जन्म से लंबित पड़ा हो |" धनुष्क बोला |

"हे धनुष्क , जैसा कि मैंने बताया , बहुत सारी चीजे हैं | उदाहरण के तौर पर , तुम्हारी एक पीड़ा पिछले जन्म से मेरे पास लंबित पड़ी है |" इंद्र देव ने बताया – "यह पीड़ा लंबित इसलिए है कि तुम्हारी आत्मा का सामीप्य हनुमान जी से है और हनुमान जी का भगवान् शिव से | इसलिए तुम्हारी आत्मा का

सामीप्य भी शिव से है | जब कोई आत्मा शिव से जुडी हो , मैं उस आत्मा को पीड़ा नहीं दे सकता क्योंकि जहाँ शिव हों वहां पीड़ा नहीं हो सकती | अगर तुम्हारा सामीप्य हनुमान जी से टूट जाए तो शिव से भी टूट जाएगा और मुझे यह पीड़ा तुम्हे देने का अवसर मिल जाएगा |"

"देव , मेरा हनुमान जी से सामीप्य कभी समाप्त नहीं होगा | इसलिए आपको ये लंबित इच्छाएं स्वप्नलोक में ही नष्ट करनी पड़ेंगी | मुझे केवल यह चिंता है की जब आप ऐसा करेंगे तो मुझे बहुत बुरे सपने दिखाई देंगे |"

"चिंता मत करो धनुष्क | मैं हर रोज तुम्हारी सैकड़ों इच्छाएं स्वपनलोक में नष्ट करता हूँ | तुम्हे पता भी नहीं चलता जब मैं ऐसा करता हूँ | तुम्हारी आत्मा स्वपनलोक की ज्यादातर स्मृतियाँ यहाँ नहीं लाती | तुम्हे तुम्हारी आत्मा द्वारा स्वपनलोक में किये गए अनुभवों में से कुछ ही याद रहते हैं | (हम सपनों का एक बहुत छोटा सा हिस्सा ही याद रखते हैं)" | भगवान् इंद्र ने बताया |

"देव इंद्र , मुझे इच्छा और कर्म का ज्ञान देने के लिए कोटि कोटि धन्यवाद | मुझे समझ में आ गया है कि जब आपको आत्मा की कोई इच्छा पूरी करने के लिए आत्मा के कर्म मानवलोक में योग्य नहीं मिलते , आप उस आत्मा की वह इच्छा स्वपनलोक में पूर्ण कर देते हैं | लेकिन तब क्या होगा अगर मैं इच्छा प्रकट करूँ कि मेरी सभी इच्छाएं इसी लोक में पूर्ण होनी चाहिए , स्वपनलोक में नहीं |"

"हे धनुष्क , अगर तुम यह शर्त लगा दोगे , और मुझे तुम्हारी अपूर्ण इच्छाएं स्वप्नलोक में पूरी नहीं करने दोगे , तो मेरे पास तुम्हारी लंबित इच्छाओं को अगले जन्मों में आगे बढाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचेगा |" इंद्र ने उत्तर दिया |

"लेकिन तब क्या होगा अगर मैं इच्छा रखूं कि मेरी सभी इच्छाएं इसी जन्म में पूरी होनी चाहिए, अगले जन्म में नहीं बढाई जानी चाहिए?" धनुष्क ने पुछा |

"ऐसा भी होता है | और बहुत प्राय: होता है | जैसे कि एक ताराचाँद नाम का व्यक्ति है | वह मृत्यु की कगार पर है लेकिन उसकी तीव्र इच्छा है की वो अपने पोते नवदीप की शादी देखे | अगर ताराचंद की इच्छा हो कि वह अपने पोते की शादी देखना चाहता है तो कोई समस्या नहीं है | मैं उसकी यह इच्छा अगले जन्मों में भी पूर्ण कर सकता हूँ क्योंकि अगले जन्मो में भी उसके पोते होंगे | लेकिन उसकी इच्छा विशिष्ट रूप से यह है की वह अपने पोते नवदीप की शादी देखे | नवदीप अगले जन्मों में तो उसका पोता होने वाला है नहीं | इसलिए उसकी यह विशिष्ट इच्छा केवल इस जन्म में पूर्ण की जा सकती है | इसलिए मेरे पास ताराचंद की इच्छा को स्वपनलोक में नष्ट करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है | लेकिन समस्या यह है कि अगर मैं आज रात उसकी इच्छा को स्वप्नलोक में नष्ट करूं , अगली सुबह वह फिर से उस इच्छा को नए सिरे से प्रकट कर देता है | मैं उसकी इच्छा को स्वप्नलोक में नष्ट करता रहता हूँ और वह उसे नए सिरे से प्रकट करता रहता है | ऐसा लम्बे समय से चला आ रहा है |" इंद्र ने बताया |

"हे देव , यह तो बहुत निराशाजनक है | क्या होगा अगर उसकी यह इच्छा पूर्ण हुए बिना वह मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा?"

"उसकी आत्मा नया जन्म नहीं ले सकेगी क्योंकि उसकी यह विशिष्ट इच्छा अगले जन्मों में आगे नहीं बढाई जा सकती |" इंद्र ने उत्तर दिया, "इसीलिए किसी भी आत्मा को ऐसी विशिष्ट इच्छाएं उत्पन्न नहीं करनी चाहिए जो अगले जन्मों में न बढाई जा सकें |"

"हे देव, अगर कोई आत्मा ऐसी अपूर्ण इच्छा के कारण नया जन्म नहीं ले पाती तो क्या वह हमेशा के लिए अटकी रहती है?" धनुष्क ने पूछा |

इंद्र ने उत्तर दिया – "ताराचंद की मृत्यु के पश्चात् उसके सबसे प्रिय बेटे अथवा बेटी को तर्पण करना चाहिए | तर्पण में उस बेटे अथवा बेटी को यह इच्छा रखनी चाहिए कि 'मेरी पिता की आत्मा की मानवलोक में देह नहीं रही | अगर उनकी ऐसी कोई अपूर्ण इच्छाएं हैं जो अगले जन्म में आगे नहीं बढाई जा सकती तो कृपा उनकी आत्मा को स्वप्नलोक में ले जाएँ और उनकी सभी अधूरी इच्छाओं को वहां नष्ट कर दें ताकि वे नया जन्म ले सके | मैं उनका प्रिय बेटा अथवा बेटी हूँ और मेरे पास उनकी आत्मा के लिए इच्छा रखने का अधिकार है |'"

‘अगर किसी का बेटा अथवा बेटी न हो तो?” धनुष्क ने पूछा |

“तो उसे तर्पण करना चाहिए जिसे अटकी आत्मा के लिए इच्छा प्रकट करने का अधिकार हो | उदाहरण के तौर पर, तुम्हारे पिछले एक जन्म में हनुमान जी ने तुम्हारे लिए तर्पण किया था क्योंकि तुम हनुमान जी को पूर्णतः समर्पित थे |” इंद्र देव ने बताया |

धनुष्क बोला – “हे देव , मुझे कर्म और इच्छा का ज्ञान देने के लिए बहुत धन्यवाद | मेरी आत्मा ज्ञान से प्रकाशित हो गई है | लेकिन मुझे एक दुःख भी है | मैंने स्वप्न में देखा कि मैं हनुमान जी के हाथों सर्वश्रेष्ठ शिष्य का पुरस्कार प्राप्त कर रहा हूँ | इसका अर्थ है कि हनुमान जी से पुरस्कार प्राप्त करने की मेरी इच्छा स्वप्नलोक में नष्ट हो गई है | अब मुझे मानवलोक में वह पुरस्कार नहीं मिलेगा |”

“हे धनुष्क , तुम्हे अपनी इच्छा नए सिरे से प्रकट करने से कौन रोक रहा है ? फिर से इच्छा प्रकट करो की तुम्हे पुरस्कार चाहिए | तुम्हारी नई इच्छा मानवलोक में पूर्ण हो जायेगी अगर तुम्हारे कर्म उस योग्य हुए तो |” इंद्र देव ने बताया |

[**सेतु टिप्पणी :** बहुत सारे भक्त अपने अनुभवों में हमें यह लिखते हैं की उन्हें बुरे स्वप्न दिखाई दिए | अगर आपको बुरा स्वप्न दिखाई दिया तो आपको खुश होना चाहिए की वह बुरी चीज आपके साथ स्वपनलोक में हो गई | अन्यथा वह मानवलोक में होती | बुरे स्वपन का यह अर्थ बिलकुल भी नहीं है की आपके साथ वास्तव में बुरा होने वाला है | लेकिन जागने के बाद आप उन बुरे स्वप्नों के बारे में सोचते हैं तो आपका वो सोचना आपके कर्मों में बुरा परिवर्तन ला सकता है , स्वपन नहीं | इसलिए जागने के बाद अपने स्वप्नों के बारे में नहीं सोचना चाहिए | उदाहरण के तौर पर मान लीजिये कि एक औरत ने स्वपनलोक में अपनी सास का बुरा रूप देखा | इस स्वप्न का यह अर्थ है की वह सास मानवलोक में बुरी नहीं हो सकती | अब मान लो कि उस औरत ने जागने के बाद यह सोच लिया कि उसकी सास बुरी है | वहां से वह रिश्ता खराब होना शुरू आ जाएगा और परिणामस्वरूप सास का व्यवहार शायद उतना ही बुरा हो जाए जैसा स्वपन में दिखा था | फिर वह औरत कहेगी कि मैंने स्वपन में पहले से ही देख लिया था की मेरी सास इतनी बुरी होने वाली है | इस उदाहरण में , सास इसलिए बुरी नहीं हुई की स्वप्न में बुरी दिखी | सास के व्यवहार में परिवर्तन आया क्योंकि उस औरत ने जागने के बाद स्वप्न का गलत अर्थ निकाल लिया और सास को शक की निगाह से देखने लगी | इसलिए जागने के बाद अपने स्वप्नों के बारे में न सोचें | अगर आप किसी बुरे स्वपन के कारण जागने के बाद अपने मन में भय पैदा कर लेंगे तो वह भय सच होने के आसार हो जाते हैं क्योंकि भय भी एक इच्छा है | आप जिस चीज से भय करते हैं , आप परोक्ष रूप से उस चीज की इच्छा करते हैं | अतः अगर आपने बुरा स्वप्न देखा तो प्रभु को धन्यवाद दें कि उनके कारण वह बुरी इच्छा स्वप्नलोक में नष्ट हो गई | अगर आप अच्छा स्वप्न देखें तो जागने के बाद उस इच्छा को नए सिरे से प्रकट कर दे और कर्म इस तरह बनायें की अगली बार वह इच्छा स्वप्नलोक में पूर्ण होने की बजाये मानवलोक में पूर्ण हो |]

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ें हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

Your successful attempts of Arpanam on this chapter are listed individually below :

Attempt ID	amount	Status	Time
534885	Rs. 251	Successful	12/11/2016 - 11:26

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous   Next Chapter »

भक्तिमाला   मंत्र   अनुभव   कृतज्ञता प्राचीर   विन्यास

Home मातंग इतिहास Terms of Use Privacy Policy Reach Us तकनीकी सहायता Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print